Dr. Kaori Kumar
अतिथि शिक्षक (Guest)
Deptt of Psychology,
S.R.A.P. College, Bara Chakia, East Champaran
(A Constituent Unit of B.R.A. Bihar University, MFP)

Class - B.A. Part I (Hon)
Subject - Psychology
Topic - Subject Matter of Psychology.
Day - Thursday
Date - 02/02/2023
Period - 2nd
Contact no - 7801466117/6202215708

मनोविज्ञान की विषय वस्तु :-

मनोविज्ञान एक वस्तुपरक विज्ञान (Positive Science) है जो प्राणी की अनुभूति तथा व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन वातावरण के सम्बन्ध में करता है। यदि मनोविज्ञान के वैज्ञानिक परिभाषा का विश्लेषण करें, तो यह स्पष्ट होगा कि मनोविज्ञान की विषय-वस्तु (Subject Matter) संकीर्ण न होकर काफी विस्तृत है जिसमें प्राणी, उसके व्यवहार, उसकी अनुभूति, वातावरण, उद्दीपन आदि सम्मिलित होते हैं। इन सभी पहलुओं का वर्णन इस प्रकार है।

(1) प्राणी :- (Organism) मनोविज्ञान में जीवित प्राणियों अर्थात् जीवित मनुष्य तथा पशु के क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इसके अन्तर्गत छोटे से बड़े स्तर के सभी प्राणियों के विभिन्न क्रियाओं जैसे चिन्तन, प्रत्यक्ष, कल्पना, स्मृति, निर्णय, संवेग आदि का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

(2) व्यवहार :- (Behaviour) मनोविज्ञान की विषयवस्तु प्राणी के व्यवहार का अध्ययन करना है। दूसरे शब्दों में मनोविज्ञान में पशु तथा मनुष्य दोनों के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। व्यवहार से तात्पर्य उन क्रियाओं से होता है जिसे दूसरे व्यक्ति या ज्ञानेन्द्रियों या व्यक्ति द्वारा प्रेक्षण किया जाता है। यदि, किसी व्यक्ति द्वारा प्रेक्षण किया जाता (क्रिया) नहीं होता

तो उसे विशेष यंत्रों का उपयोग से प्रेक्षण किया जाता है।

व्यवहार दो प्रकार के होते हैं।

1. बाह्य व्यवहार - External Behaviour

2. आन्तरिक व्यवहार - Internal Behaviour

बाह्य व्यवहार :- इसके अन्तर्गत - दौड़ना, खेलना, रोना, गिरना आदि जिसे प्रेक्षण कर सकता है ऐसे सभी आदि ये व्यवहार के श्रेणी में आते हैं।

आन्तरिक व्यवहार : हृदय-चाप में परिवर्तन, नाड़ी की गति में परिवर्तन, हृदय की गति में परिवर्तन, पाचन क्रिया आदि जिनको प्रेक्षण किसी के द्वारा बिना यंत्र और उपकरण के माध्यम से किया जा सके। आन्तरिक व्यवहार कहते हैं। मनोविज्ञान में इन दोनों तरह के व्यवहारों का कुछ वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

(3) अनुभव या अनुभूति - (Experience) मनोविज्ञान में प्राणी के अनुभव व अनुभूति का अध्ययन किया जाता है। वातावरण के उपस्थित उद्दीपन प्राणी को प्रभावित करता है जिसके फलस्वरूप उसमें कुछ अनुभूति होती है - जैसे भय, प्रेम, सुख, दुःख, ईर्ष्या आदि अनुभूतियों के प्रमुख उदाहरण हैं। प्राणी में तीन तरह के अनुभूतियाँ होती हैं - चेतन, अर्द्धचेतन, और अचेतन

(4) वातावरण या पर्यावरण - जिस माहौल में प्राणी जन्म से अपना जीवन व्यतीत करता है उस वातावरण की संज्ञा दी जाती है। वातावरण में उपस्थित परिस्थिति या उद्दीपन को प्राणी को प्रभावित करता है। और उसके फलस्वरूप वह कुछ अनुक्रिया करता है। वातावरण में कुछ परिस्थिति सरल व जटिल होती है और उसका प्रभाव प्राणी पर सदैव पड़ता है।

5. उद्दीपन :- उद्दीपन बाह्य वातावरण में एक तरह का परिवर्तन होता है जो व्यक्ति के स्नायुमंडल पर प्रतिक्रिया करता है। प्राणी उपस्थित उद्दीपन के प्रति अनुक्रिया करता है।